

Innovative Research and Education
ISBN: 978-93-5566-163-0
ABOUT WRITER



Dr. Shobha Upadhyay is born on July 19th and brought up in Jabalpur. She has a graduate in History and Sociology, M.Ed. from R.G.V. Jabalpur and Ph.D. in Education from Ujjain V. Vignanshriya, Ujjain. She has 9 years of teaching experience at Ujjain University. Dr. Shobha Upadhyay is a member of Association of Teachers, Education and Life Time Members of India, Academic Researcher Association, SRII has published 22 books, 11 research papers in many refereed journals. She has presented and participated more than 60 national and international seminars, conferences and workshops organized by IJEC, two national level and with Research Council highest National Award for International Conference Feb 2020 & Mar, Teacher Award 2018 by Shri Sri Praveenji Education Society, Ujjain. She is working at the Post of Associate Professor in Shri Mataji's Praveenji Mahila Mahavidyalaya, Ujjain by Shri Mataji Education Society (M.E.S).



Dr. Deepak More completed his schooling from Jambhura, Maharashtra and P.E. in the present form University of Pune. Pune. He pursued his B.Sc. in Education from Pimpri Chinchwad Education Trust, Pimpri. He has 12 years of teaching experience in government and private educational institutions in Maharashtra. He has worked as a head of college and as a principal in the past. He has published more than 100 research papers in refereed journals. He has presented and participated more than 60 national and international seminars, conferences and workshops organized by IJEC, two national level and with Research Council highest National Award for International Conference Feb 2020 & Mar, Teacher Award 2018 by Shri Sri Praveenji Education Society, Ujjain. She is working at the Post of Associate Professor in Shri Mataji's Praveenji Mahila Mahavidyalaya, Ujjain by Shri Mataji Education Society (M.E.S).



Dr. Jayeshwar Narayan is born and brought up in Jabalpur. He has completed his graduation in sociology and English in M.A. and Ph.D. from R.G.V. Jabalpur and Ph.D. in Education from Ujjain V. Vignanshriya, Ujjain. She has 9 years of teaching experience at Ujjain University. Dr. Jayeshwar Narayan is a member of Association of Teachers, Education and Life Time Members of India, Academic Researcher Association, SRII has published 22 books, 11 research papers in many refereed journals. She has presented and participated more than 60 national and international seminars, conferences and workshops organized by IJEC, two national level and with Research Council highest National Award for International Conference Feb 2020 & Mar, Teacher Award 2018 by Shri Sri Praveenji Education Society, Ujjain. She is working at the Post of Associate Professor in Shri Mataji's Praveenji Mahila Mahavidyalaya, Ujjain by Shri Mataji Education Society (M.E.S).



Dr. Manta Walia is an IAS officer in the Indian Administrative Service. She has completed her graduation in Political Science and History from the University of Allahabad. She has worked in various capacities in the IAS for over 20 years. She has a rich experience in the field of governance and public administration. She has published several research papers in the field of public administration and governance. She is currently working as an IAS officer in the Government of India.



Dr. Asha Kashyap is a Ph.D. holder in Education from the University of Allahabad. She has worked in various capacities in the field of education and research. She has published several research papers in the field of education and research. She is currently working as an Associate Professor in the Department of Education, Allahabad University.

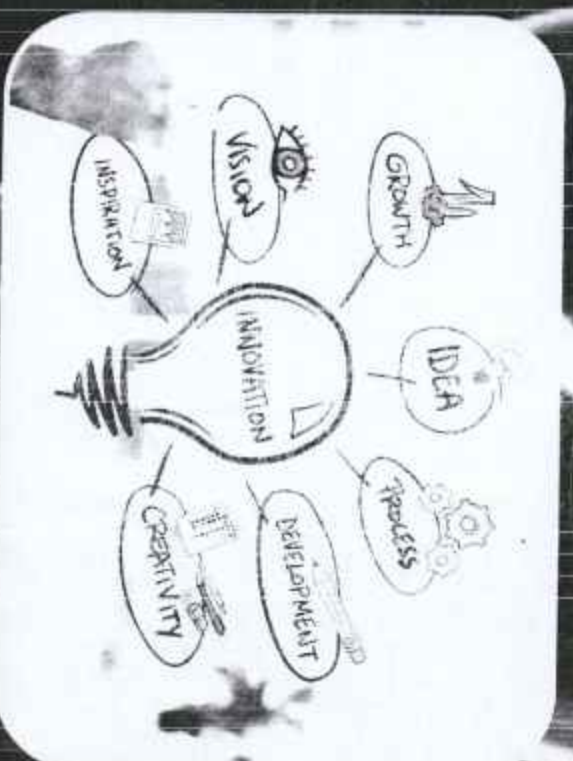


Dr. Prashant Sutar is a Ph.D. holder in Education from the University of Allahabad. He has worked in various capacities in the field of education and research. He has published several research papers in the field of education and research. He is currently working as an Associate Professor in the Department of Education, Allahabad University.

ISBN: 978-93-5566-163-0



Innovative Research and Education



Editors

Dr. Shobha Upadhyay

Mr. Prashant Sutar **Dr. Deepak More**

Dr. Asha Kashyap **Dr. Jayeshwar Narayan**

Dr. Manta Walia **Dr. Ingle Amol Ramesh**

10.	Social Behaviour In Insect	Dr. Thora Mandakini Manoharao
11.	Summer Fruit Watermelon:A Short Review	S.M.Prasad K.Kumarakumari A.Kantam and A.Selva Christy ¹
12.	Study of Self-Esteem in relation to Academic Achievement of Kashmiri Inigrant Students in Jammu	Preety Sharma Dr. Manju Sharma
13.	Ways to Support Diversity in the Classroom	Mrs. Shweta Mandoo
14.	Climate change and Environment	Mrs Jaya Sandekar
15.	Management of Psychosomatic Disorders Through Yoga	Dr.Narayan N. Jaybhaye
16.	वर्धमान परिवेश में बालकों के लिए शिक्षण में नवाचार का महत्व	रम्य राज शर्मा श्री. श्वेता शारदाशर्मा
17.	व्यवसाय परिवर्तन, इसके प्रकार एवं परास्पर	श्री. दिनेश प्रसाद शशिनी रम्या देवी
18.	सुशासन सुशाही परिवेश के आर्थिक में राष्ट्रीयता का स्वर	प्रिया राजेश्वरी शशिनी
19.	शैक्षणिक (Ethic)	हेमू गौतम
20.	वर्धमान परिवेश में पर्यावरण शिक्षण के माध्यम से पर्यावरण की आवश्यकता	संजना देवी

21.	वर्धमान परिवेश में संवेदनशील शिक्षण का महत्व	सर्वा सुधी शशिनी
22.	शिक्षण में अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व	श्री. आशा कश्यप
23.	व्यवसायिक संस्कृति	श्री. मधुसूदन शर्मा
24.	संवेदनशील शिक्षण में संवेदनशीलता का महत्व	श्री. हेमलता शर्मा
25.	वृद्धि क्षेत्रों में पर्यावरण शिक्षण की आवश्यकता	श्री. डॉ. सी. टी. कान्हे
26.	पर्यावरण शिक्षण के माध्यम से पर्यावरण की आवश्यकता	श्री. डॉ. मधुसूदन शर्मा

संजीव के कथा साहित्य में सर्वहारा समाज

प्रो. इंगले अमोल रमेश

अध्यक्ष हिन्दी विभाग

शिवनेरी महाविद्यालय, शिकर अर्नातपनर

जिला-लातूर (महाराष्ट्र) 413544 दूरभाष: 9423737256

E-Mail: amol680@gmail.com

समकालीन हिन्दी कथासाहित्य में संजीव अपना अलग स्थान रखते हैं।

हाशिए पर खड़े समाज और वर्ग की वेदना की वे पैरवी करते हैं। देश और समाज में स्थित सासे अमानवीयता की वे घण्टियाँ उड़ाने हैं। वे श्रमसाध्य रचनाकार के रूप में हिन्दी साहित्य में मशहूर हैं। सर्वहारा समाज के हित चिंतक संजीव जी ने अपने साहित्य के माध्यम से दलित, नारी, मजदूर, आदिवासी, पिछड़े समाज को साहित्य की मुख्यधारा में लाने के लिए अपनी कलम चलाते हैं। इतना ही नहीं वे उन्हें लड़ने के लिए भी वैचारिकता से प्रेरित करते हैं। भारत की असंगत मनुवादी व्यवस्था, गोंय की सामंती व्यवस्था ने इनका जीना हरान कर दिया है। सर्वहारा की नरकीय जिन्दगी को सरल, आसान बनाने के लिए उनमें स्वभिमान जगाने के लिए संजीव जी अपने समूचे कथासाहित्य के जरिए हर तरह के शोषण और अन्याय का प्रतिकार करने वाले नैतिक सामाजिक मूल्यों का आधार लिया है।

जिनका जीवन केवल श्रम के आधार पर व्यतीत होता है वे सर्वहारा वर्ग में आते हैं। श्रम के अलावा इनके पास दूसरा कोई विषय नहीं होता। इसीलिए सामाजिक शोषण का शिकार सर्वहारा वर्ग ही होता है। यह सर्वहारा गोंय से लेकर शहर तक हमेशा शोषक के रूप में ही पाया जाता है। क्योंकि भारतीय सर्वहारा समाज के शोषण में जातियता भी महत्वपूर्ण है। औद्योगिक क्रांति ने एक और भौतिक प्रगति की है तो दूसरी ओर सर्वहारा वर्ग की संस्था में बहोत्सारी हुई

है। सर्वहारा समाज के पास जीवन यापन के कोई साधन नहीं है इसीलिए उन्हें जमींदार मुखिया साहुकार आदि के यहाँ मजदूरी करना पड़ता है। या शहरों में कारखानों में यही सर्वहारा अपना श्रम बेचने के लिए मजदूर है। पूँजीपतियों ने उत्पादन के साधनों पर अपना अधिकार जमा लिया है इसीलिए वह सर्वहारा को केवल उतना ही वेतन देता है जिससे पूँजीपति को मुनाफा मिले। इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध अमेरिकन समाजशास्त्री सेन्टर्स लिखते हैं कि 'मिन वर्ग उन लोगों का वर्ग होता है जो अपनी आजीविका के लिए कायिक श्रम पर निर्भर रहते हैं। जीविकोपार्जन के लिए अपने कायिक श्रम पर ही निर्भर रहने वालों के इस गरीब वर्ग के लिए दलित वर्ग, पीड़ित वर्ग, सर्वहारा वर्ग आदि नाम भी हैं।'²

पूँजीवादी व्यवस्था ने जहाँ एक ओर विशाल औद्योगिक कारखानों को जन्म दिया है वहीं दूसरी ओर एक ऐसे सर्वहारा वर्ग का निर्माण किया है जिनके पास न तो कोई साधन है न कच्चा माल खरीदने के लिए पूँजी। जीवयापन के लिए यह सर्वहारा वर्ग अपनी श्रम शक्ति बेचने के लिए मजदूर है। श्रम-शक्ति को बाजार में वस्तु के समान खरीदा और बेचा जाता था। पूँजीपति के पास पैसा होने के कारण वह श्रम खरीद कर मालिक बना रहता है। पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों का शारीरिक मानसिक और भावात्मक शोषण होता ही है। ऐसे में ही यह मजदूर भाग्यवाद को मानते हुए पूँजीपतियों के शोषण का समर्थन ही नहीं करते बल्कि इसे पुर्नजन्म के पाप का फल मानते हैं।

धनुष टंकार— संजीव

संजीव द्वारा लिखित 'धनुष टंकार' कहानी पूँजीवादी व्यवस्था तथा औद्योगिकरण में मजदूरों का हो रहा शोषण जिससे उनकी तब से बदत्तर हो रही जिन्दगी का चित्रण है।

पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूर अपना श्रम बेचकर कठिन से कठिन काम । है जिससे उनके हाथ खून से छरछरा जाते हैं जिसका मालिक पर कुछ प्रसर नहीं होता वह केवल मुनाफा कमाने के बारे में ही सोचता है। नाममात्र । के कारण मजदूरों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे बस्ती में बजबजाती नाली, भिन्नभिन्नते मछर, मक्खियों के बीच कचरे के ढेर ढाड़ खाने के सामन वे रहते हैं। स्थायी और अस्थायी मजदूरों के बीच श्रम तगाकर मालिक मजदूरों को स्थायी बनाने के विरोध में है। इसी का शम इम्मन को लूज शटिंग का धक्का लग जाने से उसकी कमर श-हमेशा के लिए टेड़ी हो जाती है। लेकिन उसे कंपनी मालिक से मुआवजा मिलता क्योंकि वह अस्थायी मजदूर है तथा उसका नाम टेकेदार या कंपनी खाते में नहीं है। इसीलिए इम्मन के अपाहिज होने पर उसकी पत्नी सुरसती काम करना पड़ता है।

प्रस्तुत कहानी में नारी शोषण का चित्रण भी हुआ है। सर्वहारा नारी का ; करते समय और काम बनाने के लिए यौन शोषण किया जाता है। जब ल अपाहिज होता है तो उसकी जगह पर पत्नी सुरसती काम पर आती है इन एक स्टोर रूप में पति इम्मन के सामने ही सुरसती के साथ मुंशी त्कार करता है। तब मालिक मुंशी को सस्पेंड करता है। मुंशी के पहले भी ने सारे मजदूरों को सस्पेंड किया गया था। सुरसती जब सस्पेंड मजदूरों को १ पर लेने, उनका वेतन बढ़ाने तथा अस्थायी मजदूरों को स्थायी बनाने के १ मूख हड़ताल करती है तो कंपनी मालिक उसकी अनिच्छा से ही उसे तदस्ती शरबत पिलाकर उसका अनशन तोड़ देते हैं। आन्दोलन के कारण ल दस सस्पेंड मजदूरों को काम पर लिए जाते हैं जिसमें एक मुंशी भी है तने उसकी इज्जत लूटी थी। काम का ठेका पाने के लिए औरतों को पेश या जाता है उनकी यौन सुंदरता को देखकर काम दिया जाता है "एक गो

बडका होटल में लिया गीस बड़ा साहेब के उस्मान खां। 3 हां एक गो मेम, अंगूर के माफिक गोरी, रस से लबालब, बिल्कुल नंगी।"³

इम्मन अपने परिवार के जीवन निर्वाह के लिए पीतल फरा क्रोम आदि के तुकड़े चुनकर गुजारा करना चाहता है लेकिन यह श्रष्ट लुटेरी व्यवस्था उसका शोषण करती है "स्टोर से गैते, झूठी, साबल आदि की निकासी के बाद ताला डालकर वह स्लेग डिपो और छाई के ढूह में खुरच-खुरचकर पीतल फेरो क्रोम आदि के टुकड़े चुनता, जिनमें एक तिहाई रकम बाच एंड वार्ड की बंधी होती। स्कूप खरीदने वाले सेठ 'चोरी कमाल' कहकर एक-तिहाई पहले ही मार लेता और बाकी हिकारत से उसके सामने फेंक देता दिनों दिन सेठ का काशेबार फैलता गया था और वह।"⁴

इस प्रकार पूँजीवादी व्यवस्था सर्वहारा मजदूरों के विरोध में है। जिसकी बढौलत सर्वहारा समाज शोषण का शिकार हो रहा है। शोषण के कारण ही मजदूरों को जैसे लकवा मार गया है। वह अर्धमृत अवस्था में दयनीय शोषित जिन्दगी जी रहा है।

हलफनामा संजीव

सजीव द्वारा लिखित 'हलफनामा' कहानी पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों का हो रहा शोषण का चित्रण है। मजदूर दिन-रात जी तोड़ मेहनत करने पर भी उन्हें सैटी कपड़ा और मकान की चिंता हर पल सताती है। तो पूँजीपति इन मजदूरों का श्रम खरीदकर बेहतर जिन्दगी जीते हैं।

हलफनामा कहानी का नायक हनीफ इलेक्ट्रानिक्स मिस्त्री है। थोड़ी बहुत कमाई करकर वह कंपनी में वास्टियों को ठीक करने का काम करता है। कम

³ 'गोरी की मार, रस, लबालब, बिल्कुल नंगी' प्रकरण, ३६ दिवस, ३००० पृष्ठ संख्या १०
⁴ 'एक गो मेम, अंगूर, लकवा मार' प्रकरण, ३६ दिवस, ३००० पृष्ठ संख्या १०

मजदूरों के कारण वह अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। आर्थिक अभाव के कारण पति-पत्नि के बीच विवाद भी चलता है। कंपनी के वर्कर्स हाऊस में रहकर वह अपना संसार चलाता है। वर्कर्स हाऊस में कई सारी असुविधाएँ हैं इसलिए उसकी पत्नि को खुले में ही नशाना पड़ता है। कंपनी के मालिक तथा आने वाले उसे खुले में नहलते हुए देखते हैं। मालिक की उस पर गुंशी नजर है पर हनीफ मालिक के खिलाफ कुछ कर नहीं सकता। पति की इस कमजोरी के कारण पत्नी ही उसे नामर्द कहकर छोड़कर चली जाती है। मालिक हनीफ को झूठे खुन के इल्जाम में फसाकर जेल भिजवाता है। दो वतल की सेटी के लिए परेशान आदमी खुन करने का साहस थोड़े ही करेगा। लेकिन कुशन को कसम दिलाकर सब को झूठ में बदल दिया जाता है।

पूँजीवादी व्यवस्था में पूँजीपती मजदूर वर्ग के श्रम का शोषण कर उन्हें बदहाली में जीवन जीने के लिए मजदूर करते हैं। वर्तमान में तो कंपनी मालिक कंपनियों में टी.वी. कैमरे लगाकर मजदूरों पर ध्यान रखते हैं और अधिक से अधिक श्रम लिया जाता है। हनीफ कहता है— "जब श्रीमान जी, ये बूंद-बूंद-बूंद सेट लोग सारी ऑक्सीजन पी गए, हरियाली चाट गए, धरती की सारी संपदा सारी प्रतिभा, गरज की सारी ऊर्जा इनकी आंठों में समा गई..... और हम इनके लिए पेंडू लगाकर ऑक्सीजन पैदा करें। गर हमें कुछ लेना है तो इनसे ले संसाधन से लेकर प्रसाधन और प्रसाधन से लेकर परमाणु बम और दूसरे हथियार! यानी हम जीये तो इनके रहम पर!"⁵

आजादी के पचास साल बाद भी मजदूर अपने बच्चों की पढ़ाई तक कर नहीं पाते। मालिक के आशिरवाद से मजदूरों के बच्चे मजदूर ही बन जाते हैं। मेहनत से जो भी कमाते हैं कंपनी मालिक विकास कार्य के नाम पर जबदस्ती वसूलते हैं

⁵ वही, सैन-सैन, वीणा, सरस्वत 2000 पृष्ठों-116

पर मजदूरों के जीवन में विकास नाम की कोई किरण दिखाई नहीं देती। मजदूर उसी दयनीय अवस्था में अपना जीवन यापन करता है— "इस तरह आजादी की पचासवी सालगिरह पर जब की अपने यहाँ के लोग सो रहे थे, मैं अपनी बर्बादी के मलबे पर बैठा जग रहा था, फिर भी मैं खुश था, चलो आजाद तो हुआ।"¹

इस प्रकार पूँजीवादी व्यवस्था में पूँजीपति मजदूरों के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए उन्हें गुमराह करके उनका शोषण करते हैं। उन्हें देकार की चीजें बाँटकर संघर्ष से उनका ध्यान विचलित करते हैं ताकि वे शोषण की गद्दी के पहिये बने रहें।

संदर्भ संकेत

1. भारतीय मध्यम वर्ग और सामाजिक उपन्यास-डॉ. पी.एस. शॉमस, जवाहर पुस्तकालय सदर लाजार, मथुरा 1995—पृ.संख्या 49
2. संजीव की कथा यात्रा पड़ला पड़ार-संजीव, काफी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008 पृष्ठ संख्या-170
3. वही, पृष्ठ संख्या-168
4. खांज- संजीव, दिशा प्रकाशन दिल्ली, संस्करण -2000 पृष्ठ संख्या-115
5. वही, पृष्ठ संख्या -123

¹ वही, पृष्ठ संख्या -117